E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2019; 1(2): 13-16
Received: 09-05-2019
Accepted: 16-05-2019

प्रतिमा सिंह
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रतिमा सिंह
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

मानवाधिकार एवं मानवीय वेदना के समक्ष चुनौतियॉ

प्रतिमा सिंह

सारांश
मानवाधिकार की अवधारणा उतनी ही पुरानी है जितना कि मानव इतिहास। मनुष्य के गरिमामय जीवन की रक्षा हेतु कुछ मूलभूत अधिकारों की आवश्यकता होती है, वे अधिकार ही मानवाधिकार हैं। बीसवीं सदी में लोकतांत्रिक व्यवस्था के विकास के साथ–साथ मानवाधिकारों के प्रति सतर्कता, जागरूकता एवं अधिकारों की लोकप्रियता अधिक विस्तृत हुई है। ये अधिकार सार्वभौमिक हैं, जिन्हें किसी भी परिस्थितियों में राज्य द्वारा उपेक्षित नहीं किया जा सकता। साथ ही ये अधिकार धर्म, जाति, लिंग, रंग आदि से परे हैं। साथ ही ये अधिकार समाज के आश्रित वर्गों विशेषतया बच्चों, महिलाओं, वृद्धों, दिव्यांग जनों आदि की स्थिति में अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। 20वीं के राजनीतिक संदर्भ में जहॉ नवीन परिवर्तन हुए वहीं मानवाधिकारों के आदर्श व सिद्धांतों को लेकर मतभेद भी उभर कर आये। मानवाधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा के रूप में विकास अर्थात् संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव संख्या 217 (तृतीयद्ध द्वारा मानवाधिकार को सार्वभौमिक रूप से अंगीकार किया जाना, महासभा के 21वें अधिवेशन में 16 दिसंबर 1966 को आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय संविदा तथा नागरिक एवं राजनीतिक अधिकारों पर 1966 में अंतर्राष्ट्रीय संविदा का अंगीकार किया जाना मानवाधिकार कें महत्व को प्रतिबिम्ति करता है।
जीवन व जगत की व्यापक सत्ताओं में से वेदना भी एक है, परन्तु भित्त शास्त्रों में इसका व्यवहार भिन्न अर्थो में होता है। बौद्ध धर्म के अनुसार–'वस्तुओं के सम्पर्क अथवा उनके विचार के सम्पर्क से जो सुख दुख का अनुभव कराती है, वही वेदना कहलाती है।'' वेदना मूलतः संस्कृत का शब्द है। इसको हम अन्य अर्थों में दर्द, पीड़ा, वेदना, व्यथा इत्यादि के रूप में भी जानते हैं। वेदना शब्द का प्रयोग अनुभूति या मन पर पड़ने वाले प्रभाव को कहा जाता है। वेदना का तात्पर्य 'बहुत तीव्र मानसिक या शारीरिक कष्ट से है।' हम मानव जीवन में मुख्यतः तीन प्रकार की वेदनाएं होती हैं– प्रथम कुशल वेदना (सुखद वेदना), द्वितीय अकुशल वेदना (दुःख वेदना) एवं तृतीय अत्याकृत वेदना (असुख–अदुःख वेदना) आदि। किसी भी प्रकार की वेदना उत्पन्न होने के पीछे सुख, दुःख, सौमनस्य, दौमनस्य, उपेक्षा आदि इन वजहों का होना माना जाता है।

मूल शब्दः– वेदना, मानव, नारी, पर्यावरण आदि।

प्रस्तावना
वेदना–सहानुभूति एवं समानभूति
संकीर्ण अर्थों में वेदना, सहानुभूति एवं समानभूति अर्थात् इन तीनों शब्दों को समान अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है ऐसे में इनके बीच अन्तर स्पष्ट किया जाना अपरिहार्य है। सहानुभूति में तीन शब्द हैं–'सह', 'अनु' और 'भूति' अर्थात् सहानुभूति, जिसका अर्थ होता है कि दूसरा हमारे दुःखों के प्रति समान अनुभूति प्रकट करे। जब हम दुःखी हों तो हमें सांत्वना दें, हमें सम्भाले। सहानुभूति पाने वाला याचक होता है, देने वाला दाता। जिस हम क्षण याचक बनकर खड़े हो जाते हैं, जिस क्षण हमारा स्वाभिमान व सम्मान आंशिक रूप से गिर जाता है, सहानुभूति पाने वाला बीमार बन जाता है और धीरे–धीरे सहानुभूति पाने का आदि हो जाता है। यह अपने चरित्र को भूलाकर 'दया का पात्र' बने रहने में गौरव की अनुभूति करता है।
समानुभूति यानी दूसरों के दर्द को अपने जैसा महसूस करना। मानवीय भावनाएं समझने और मानवीय संबंधों को मधुर एवं स्थायी बनाए रखने में एवं किसी की वेदना को समझकर उसके दुःख को साझा करने हेतु सहानुभूति, समानुभूति से आगे का उपक्रम है, जिसके अन्तर्गत व्यवहार नहीं, व्यवहार में संवेदना झलकती है, जिसे हम गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, महात्मा गॉधी, आदि के आचरण एवं व्यवहार में स्पष्ट देख सकते हैं।
क्या हमनें कभी मानव जीवन के महत्व को समझने का प्रयास किया है कि हमें यह जीवन क्यों मिला है और इस जीवन में हमें क्या करना चाहिए जिससे यह जीवन सफल हो सके। मानव जीवन के महत्व को समझने हेतु कुछ उदाहरण पर गौर करें–क्या हम कभी अनुभव करते हैं, एक मछली मछुवारे के जाल में उलझकर बिना पानी के तड़पकर प्राण त्यागती है। कितना भंयकर होता होगा जब एक शेर एक हिरण के पीछे दौड़कर उसका कंधा दबोचता है और वह हिरण तड़पकर प्राण

त्यागता है। अन्य जीवों की तरह मनुष्य के प्राण संकट में नहीं होते तभी यह जीवन अनुकूल है। हमें मानव जीवन का महत्व समझना चाहिए और ऐसा करना ही हमारे मानव जीवन का एक मात्र लक्ष्य होना चाहिए।

नारी और वेदना

नारी की वेदना पर लिखते हो बहुत लोग है लेकिन मुद्दा ये है कि समझते कितने हैं। कहा जाता है कि पुराने समय में ''नारी'' शब्द के उच्चारण के साथ ही आदर की भावना जागृत हो जाती थी। पुराणों में भी नारी का स्थान सर्वोच्च माना गया है, पर क्या सच में सर्वोच्च माना गया है? नारी अपनी वेदनाओं को सामाजिक व पारिवारिक स्तर पर छुपा के रखती है ये एक विचारणीय प्रश्न है? बचपन से ही लड़की को सिखाया जाता है उसे दूसरों के घर जाना है, उसे, बेटी की पूरी उम्र जीने से पहले ही एक वधु के रुप में संस्कार दिए जाते हैं आखिर क्यों? वो अपनी खुशी के अरमानों को दबाकर सबको खुश करने में लगी रहती है। कोई बच्चा अगर अच्छा कर जाए तो सामाजिक स्तर पर श्रेय पिता के नाम को मिलता है, और जब गलत करें तो माँ–बाप की परवरिश को कोसा जाता है। एक माँ जो नौ मास कोख में एवं उसके परवरिश के बाद भी जब उसे श्रेय नहीं ले पाती है, तो फिर उस माँ को कोसने का हक इस समाज को कौन देता है? क्या ये समाज उस माँ की वेदना को कभी समझ पाएगा?

क्या नारी का अस्तित्व सिर्फ इतना ही है कि वह वंश को आगे बढ़ाए और रूढ़िवादी परम्परा व स्त्री अधीनता जीवित रखे? जैसा कि लर्नर का मानना है ' स्त्री की यौन अधीनता सबसे प्रारम्भिक कानूनी व्यवस्थाओं में भी मौजूद थी और उसे राज्य की सम्पूर्ण शक्ति के साथ कार्यान्वित किया जाता है। उसे बचपन से ही विवाह के पश्चात् सास–सुसर, पति, बच्चे को जरा भी आघात न पहुँचे ऐसा व्यवहार करना तो फिर उसका अपना वजूद क्या है।

कौन हूँ मैं,
क्या है मेरा वजूद,
बस मैं एक लड़की हूँ और रीति–रिवाज मेरा ताबूत
क्या घर की चहार दीवारी में रहना है मेरा नसीब
या खोल पंख सपनों में उड़ जाऊँ और पाऊँ सुकून,
कितना भी कर के दिखाएं
हमारा मूल्य रहता शून्य!!

हम हमेशा से सुनते आए हैं नारी शक्ति का रुप है, नारी स्वयं में शक्ति स्वरूपा है। नारी संघर्ष, सहनशीलता, सर्वस्व न्यौछावर करने वाली देवी है, दुर्गास्वरूपा है। किन्तु इसका एक दूसरा पहलू है, घर–घर में स्त्री को रीति–रिवाज़, नैतिकता, संस्कार और धर्म आदि के नाम पर बाँधा जाना, कहते हैं देह की वेदना से अधिक रूह की वेदना होती है। हिन्दी साहित्य में जिसे अज्ञात हिन्दू महिला कहा गया, जिनका नाम हरदेवी था, उनकी पुस्तक ''राण्डो पर सितम'' में विधवा महिला, बाँझ महिलाओं आदि का ऐसा मार्मिक चित्रण किया है कि ये स्त्रियाँ उम्र भर असहनीय वेदना से गुजरती हैं तानें, उलाहनें, हर कदम पर अपेक्षाएं उसे घुट–घुटकर मर रही, तानों से रीति–रिवाजों से, गालियों एवं लांछनों से लाखों स्त्रियों की रूह मारी जा रही है। कितनी महिलाएं आत्महत्या कर लेती हैं या तो मार दी जाती हैं जो कि नारी वेदना की प्रमुख चुनौती है। दो पंक्तियों से बात स्पष्ट करती हूँ:–

वह कड़ी धूप बेहतर थी, इस ठंडी छाँव से!
वह देह जलाती थी, यह रूह जलाती है!!

औरतों को घर का काम निपटाकर, बच्चों को स्कूल छोड़कर अपने काम पर जाने को कहा जाता है। औरत ही माँ बनकर, बेटी को काम और बेटे को आराम सिखाती है। हम औरत ही सास बनकर, बहु को नौकरानी और बेटे को मालिक की तरह समझती हैं। सड़क पर चलती दूसरे औरतों पर कसीदें पढ़े जाते हैं, हम कैसी नारी शक्ति हैं जो स्वयं का अस्तित्व समाप्त कर स्वयं ही समाज को पुरूष प्रधान बनाती है। हम औरतें क्यों लड़की को जन्म देने के बाद लड़के के समरूप नही पालती? आज के समाज में नारी स्वयं एक 'स्त्रीलिंग' होने पर भी बेटे के जन्म को प्राथमिकता देती है। क्यों उसे उच्च स्थान देती है? क्यों आखिर एक औरत ही दूसरी औरत की वेदना को नहीं समझ पाती है? मेरे अनुसार जिस दिन महिलाओं ने महिलाओं को समझना शुरू कर दिया उसी दिन से ये समाज भी नारी की दबी हुई वेदनाओं को समझना शुरू कर देगा।

पुरूष की वेदना

कौन कहता है कि, मर्द को दर्द नहीं होता? फिल्मों में कई बार सुना होगा कि मर्द को दर्द नहीं होता लेकिन यह बात असल ज़िंदगी में बिल्कुल लागू नहीं होती। जितना आसान स्त्री पर व्यंग कसना या उपहास उड़ाना है, उतना ही मुश्किल एक स्त्री होना है उसी तरह जितना आसान पुरुष को अभद्र कहना या कठोरता से तुलना करता है, उतना ही मुश्किल एक पुरुष होना है। समाज के द्वारा जन्म से ही लड़के एवं लड़कियों के सामाजिक व्यवहार को निर्धारित कर दिया जाता है। लड़का है तो वो सबके सामने रो नहीं सकता, खाना नहीं बनाना, घर का कोई काम न करें, अपने पौरूष को बनाए रखें इत्यादि। यदि लड़का या पुरुष अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए, रो देता है तो समाज उस पर व्यंग्य कसता है कि देखो, लड़कियों की तरह रो रहा है। यदि वह अपनी पत्नी की खाना बनाने, या अन्य घरेलू कार्य में मदद करता है तो उसे 'जोरू का गुलाम' इत्यादि शब्दों से व्यंग्य किया जाता है। इंसान चुनौतियों से नहीं अपनी कमजोरियों से हारता है। उनकी पितृसत्तात्मक सोच हावी रहती है कि आप पुरुष हैं आपको सख्त रहना है। दर्द सहन करने की सबकी अपनी क्षमता होती है। मानसिक दर्द और शारीरिक दर्द में पुरुषों और महिलाओं दोनों में दर्द सहने की क्षमता समान होती है। मानसिक दर्द शायद पुरुषों में महिलाओं से अधिक हो क्योंकि उन पर घर की आर्थिक जिम्मेदारी अधिक होती है।

पुरुष भी है एक इंसान, ना समझो उसे शैतान, माना बाहर से है वो सख्त, पर उसके अंदर भी पनपता है एक दर्द, नहीं दिखाता किसी को अपने अश्क पर अकेले में तड़पता है हर वक़्त, दर्द उसको भी इश्क में होता है पर वो हर पल अकेले में रोता है, अगली सुबह फिर वो एक हँसी के साथ जागता है, और सबकी ख्वाहिश पूरी करने के लिए भागता है। औरत कभी अपने लिए नहीं जीती और पुरुष कभी अपने लिए नहीं कमाता। नारी त्याग की मूरत है, तो पुरुष संघर्ष की सूरत है। दोनों को एक–दूसरे की सम्मान, संवेदना को समझने की जरूरत है।

पर्यावरण एवं मानव वेदना

आज संसार में पशुओं का उत्पीड़न जिस तरह से किया जा रहा है उसे देखकर कोई भी व्यक्ति जो भावशील हृदय का हो दर्द से कराह उठेगा। पशु–पक्षियों की वेदना को नज़र–अंदाज करके, उन पर होने वाला अत्याचार मनुष्यता पर एक कलंक है। समस्त प्राणी जगत में सर्वश्रेष्ठ कहे जाने वाले मनुष्यों को पशु–पक्षियों की वेदना को समझे बिना क्रूरता का व्यवहार करना कहाँ तक शोभा देता है?

परमात्मा की बनायी इस सृष्टि में बुद्धि, विवेक एवं भावना में मनुष्य श्रेष्ठतम है किन्तु वह पशु–पक्षियों पर दया, उनकी रक्षा और उन्हें कष्ट से बचाने के बजाए उनके साथ क्रूरतम् व्यवहार

करता है। यह दर्शाता है कि मानव कितना वेदना विहीन होते जा रहा है। उदाहरण के तौर पर पक्षियों का उत्पीड़न भी पशुओं से कम नहीं है। उन्हें पिजड़े में बन्दी बनाकर रखना, बाँधकर अड्डों पर पालना, नशा पिलाकर लड़ाना और यहाँ तक लड़ाना कि जब तक वे मर न जाए इन पक्षियों का उत्पीड़न ही तो है। हम उनकी वेदना को ना समझते हुए उन्हें एक मनोरंजन का साधन बना दिये हैं। पशु–पक्षियों का उत्पीड़न करना एक पाशविक ही नही पैशाचिक वृत्ति भी है। क्षमता, दया एवं करूणा के आधार पर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का सिद्धान्त हिन्दू धर्म की आधारशिला है, ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' भारतीय परम्परा का आदर्श रहा है, सभी धर्मों में जीव–जन्तु पर दया करने का निर्देश दिया गया है, इसके बावजूद मनुष्य पशु–पक्षियों पर कितना और किस–किस प्रकार अत्याचार करता है, बुरी तरह से उनका उत्पीड़न कर रहा है, इसको आए दिन सामान्य जीवन में देखा जा सकता है। यह और भी दुःख और खेद की बात है कि मनुष्य का यह अत्याचार इन्हीं पशु–पक्षियों पर चल रहा है, जो उसके लिए उपयोगी, उसके मित्र, सेवक तथा सुख–दुःख में सहगामी, बच्चों की तरह ही भोले, निरीह और आज्ञाकारी हैं।

जो व्यक्ति अन्य पशु–पक्षियों के प्रति सहानुभूति एवं दया का भाव नहीं रख सकता वह संसार में किसी के प्रति सद्भाव रखने में असमर्थ ही रहेगा। जहाँ सुमति एवं सद्भावनाएँ हैं, सुख–सम्पत्ति का निवास एवं विकास वही सम्भव है। जहाँ अन्याय अत्याचार, निर्दयता एवं स्वार्थपरता होगी वहाँ विनाश का ही बोलबाला रहेगा, यह एक अटल सत्य एवं शाश्वत सिद्धान्त है।

विद्यार्थी जीवन एवं मानव वेदना

आज के विद्यार्थी अपने जीवन में सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों को झेलकर संघर्ष करता हुआ इस जद्दोजहद में रहता है कि उसे सुखमय जीवन का आधर मिल सके। उससे लोगों में इतनी अधिक अपेक्षा रहती है कि विद्यार्थी तनाव में आ जाता है, जबकि समाज उसके पीछे छुपी विद्यार्थी जीवन को वेदना को समझने में सदा ही असफल रहा है, समाज को सिर्फ एक विद्यार्थी से जुड़े असफल परिणाम ही दिखाई देते हैं। विद्यार्थी के तनाव के कारणों में समय का उचित प्रबंधन, विजन में अस्पष्टता, मल्टीटॉस्किंग का भूत, बेमन से काम तथा पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ प्रमुख हैं। एक वजह ये भी है कि वह बनना एक पेन्टर या गायक चाहता हो और पारिवारिक वजहों से उसे इंजीनियर, डॉक्टर की पढ़ाई करनी पड़े तो वह अपने अंदर की इच्छाओं को भयवश जाहिर भी नहीं कर पाता।

सारभूत रूप में कहें तो उद्देश्य में अस्पष्टता, तनाव का सबसे बड़ा कारण है, अगर हमें यह नहीं पता कि क्या करना चाहिए तो सदा संदेह में रहते हैं। इसलिए एक विद्यार्थी को भी चाहिए कि उसे कोई दुविधा हो तो यह अभिभावक या किसी विश्वासपात्र व्यक्ति से उस संबंध में बात करनी चाहिए।

मानवीय वेदना के समक्ष चुनौतियाँ

- आधुनिकता की चकाचौंध में हमे अपने संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों को दरकिनार नहीं करना चाहिए। जीवन मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति आस्था–निष्ठा की बात तो कोई सोचता ही नहीं। वैचारिक शून्यता और दुष्प्रवृत्तियों के चक्रव्यूह में फंसा हुआ दिशाहीन मनुष्य पतन की राह पर फिसलता जा रहा है। मनुष्य का दूसरे मनुष्य के प्रति कर्त्तव्य, लगाव, जिम्मेदारी, इंसानियत को भूलता जा रहा है। हम देखते हैं कि–यदि किसी महिला, या पुरूष के साथ कोई विवाद या अभद्र घटना घटित होती है तो हम उसकी मदद करने के बजाय वीडियो बनाकर वायरल करने में आनंदित होते हैं। संपत्ति, धन, सत्ता के नाम पर रिश्तों को बेचा जा रहा है।
- प्रकृति, पशु पक्षियों की वेदना का प्रमुख चुनौती– मनुष्य है, और मनुष्य की वेदना की प्रमुख चुनौती वैश्वीकरण, मशीनीकरण, निजीकरण है। फोन, मोबाइल, इन्टरनेट से लोग एक दूसरे से जुड़े तो रहते हैं, मगर वे भावनाएँ खोते जा रहे हैं।
- परिवर्तन चक्र तीव्र गति से घूम रहा है। सामाजिक स्थिति बहुत तेजी से बदल रही है। दिन–प्रतिदिन नए–नए अविष्कार हो रहे है, पर आतंरिक दृष्टि से मनुष्य टूटता और बिखरता जा रहा है। सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन में चतुर्दिक अराजकता और उच्छंखलता छाई हुई है। समाज सेवा का क्षेत्र हो या धर्म–आध्यात्म अथवा राजनीति का, चारों ओर अवसरवादी, सत्तालोलुप, आसुरी प्रवृत्ति के लोग ही दिखाई देते हैं। त्याग, बलिदान, शिष्टता, शालीनता, उदारता, ईमानदारी, श्रमशील का सर्वत्र उपहास उड़ाया जाता है। सामान्य नागरिक से लेकर सत्ता के शिखर तक अधिकांश व्यक्ति अनीति–अनाचार में आंकठ डूबे हुए हैं। ऐसी विकृत मानसिकता के चलते मनुष्य वैज्ञानिक प्रगति से प्राप्त सुख–सुविधा के अनेकानेक साधनों का दुष्प्रयोग ही करता रहता है। धैर्य व संयम की मर्यादाएं टूट रही हैं, अहंकार व स्वार्थ का नशा हर समय सिर पर सवार रहता है ऐसी स्थिति में क्या सामाजिक समरसता व सहयोग की भावना जीवित रह सकती है? सुख, शांति व आंनद के दर्शन हो सकते हैं? आज समाज में मूल्यविहीन भोगवादी संस्कृति का अंधानुकरण और विलासिता का अमर्यादित आचरण सर्वत्र देखा जा सकता है।
- आज का युवा वर्ग ऐसे ही दूषित माहौल में जन्म लेता है और होश संभालते ही इस प्रकार की दुःखद एवं चिंताजनक परिस्थितियों से रूबरू होता है। आदर्शहीन समाज से उसे उपयुक्त मार्गदर्शन नहीं मिलता और दिशाहीन शिक्षा पद्धति उसे और अधिक भ्रमित करती रहती है। भोगवादी आधुनिकता के भटकाव में फंसी युवा पीढ़ी दुष्प्रवृत्तियों के दलदल में धंसती जा रही है। विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थान में मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति कहीं कोई निष्ठा दिखाई ही नहीं देती।
- विलियम शेक्सपियर ने कहा था– ''यदि घावों को जुबान होती तो अपनी वेदना खुद बयान करते।'' इंसान की जिदंगी में भी हजारों ऐसी वेदनाएं होती हैं जो वह किसी से कह नहीं पाता और वह उसके लिए समस्यात्मक हो जाती है, जो उसके जीवनशैली पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालती है।

निष्कर्ष

मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा 1948 में पहली बार यह घोषित किया गया कि सभी व्यक्ति स्वतंत्र रूप से जन्म लेते हैं और मानवीय गरिमा व अधिकारों में समान हैं। वस्तुतः हम सब को भातृत्व की भावना के साथ एक दूसरे के प्रति व्यवहार करना चाहिए।

हमें चुनौतियों से आगे बढ़ने के लिए एक सकारात्मक नजरिये से नए रास्तों की खोज करनी चाहिए जिससे हमें आगे बढ़ने व विकसित होने में मदद मिल सके। आम जीवन में हमें संवेदनहीनता, उपहास, उपेक्षा इत्यादि बातों को भूलकर अपने कर्म को समर्पण भाव से परिपूर्ण होकर अपने लक्ष्य प्राप्ति के उद्देश्य की ओर लगे रहना चाहिए। आधुनिक युग में नैतिकता क्षीण होती जा रही है। जैसे–जैसे इण्टरनेट व सोशल मीडिया का प्रभाव बढ़ रहा है वैसे–वैसे हम नैतिकता को भूल रहे हैं। सोशल मीडिया का प्रयोग गलत नहीं है, यह ज्ञान का स्तर बढ़ाता है लेकिन आज कुछ बच्चें इसका गलत प्रयोग कर अपने संस्कारों को भूल रहे हैं। बड़ों का आदर सम्मान भूल रहे हैं। हमें

आधुनिक बनना चाहिए, लेकिन अपने संस्कारों को नहीं भूलना चाहिए। इसका सम्पूर्ण दोष युवा पीढ़ी को देना गलत है। माता–पिता भी कुछ हद तक इसके लिए जिम्मेदार हैं। शिक्षकों व अभिभावकों का नैतिक कर्त्तव्य है कि युवा पीढ़ी को नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करें।

यह सच है कि हमारे सामने वेदना रूपी चुनौतियों से सामना करने के लिए कोई विकल्प नहीं है, लेकिन शायद मानव के जीवन में वेदना की चुनौतियां एक दैवीय योजना का हिस्सा है। इसलिए यह आवश्यकता है कि हम इन चुनौतियों को एक समस्या के रूप में नहीं बल्कि एक अवसर के रूप में स्वीकार कर अपने जीवन में आगे बढ़ें। वेद पढ़ना आसान हो सकता है लेकिन जिस दिन आपने किसी की ''वेदना को पढ़ लिया तो समझो आप ने ईश्वर पा लिया।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हवलदार त्रिपाठी– बौद्ध धर्म और बिहार, पृष्ठ संख्या।
2. रामचन्द्र वर्मा (सम्पादक) – मानक हिन्दी कोश।
3. साधना आर्य, निवेदिता मेनन व जिनी लोकनीता (सम्पादक)– नारीवादी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
4. शर्मा, कृष्ण कुमार (2012): मानवधिकार एवं दलित चेतना, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 483/24, प्रहलाद गली, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002.
5. शर्मा, रेखाः दलित महिलाएं एवं मानवाधिकार, रावत प्रकाश, 4264/3 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 2012, 110002.
6. सुमन, डॉ मंजू दलित नारी एक विमर्श, सम्यक प्रकाशन, 32/2 क्लब रोड, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली।, 2004,
7. कितना सच हुआ दलितों के लिए भीमराव अम्बेडकर का सपना–दा इंडियन वायर।
8. यादव, डॉ0 रवि प्रकाश महिला एवं बालकों के विरूद्ध हिंसा।, 2012,
9. डॉ0 मंजूलता,: अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न; अर्जुन पब्लिशर्स हाउस, नई दिल्ली।, 2004
10. रावत, ज्ञानेन्द्रः औरः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।, 2006
11. दीक्षित, सोना कुमार अरूण, मानवाधिकार और महिलाए योजना पत्रिका, मार्च।, 2004:
12. पटेल, अनिता, महिला उत्पीड़न का सिलसिला अब तक 'योजना, पत्रिका, जून।, 2002,
13. ncrb.gov.in
14. mahilaayog.u.p.nic.in